कवितावली — Paper I

प्रश्न — तुलसी की भक्ति भावना का विवेचन करें?

उत्तर — गोस्वामी तुलसीदास हिन्दी साहित्य आकाश के जगमगाते नक्षत्र हैं। इनकी रचनाओं की विराट चेतना और अलौकिक लोक दृष्टि तथा ~~प्रभावित~~ की अपार भक्ति की विराट चेतना की संयोगत रूप से जो त्रिवेणी हिन्दी साहित्य के उद्दण्ड स्रोतस्विनियों में प्रवाहित हुई है। इससे हिन्दी साहित्य की सारी जमीन हरी भरी एवं शस्य श्यामला हो गई है। ~~तुलसी~~ तुलसी की भक्ति भावना किसी भी काव्य के कवि के लिए चुनौती भरा रहा। तुलसी ने राम की चरित्र को लेकर [illegible] भक्ति का प्रचार प्रसार किया है। भारतवर्ष और हिन्दी के जगत के लिए कल्याणकारी है। उन्होंने राम भक्ति विनयपत्रिका सुन्दर काण्ड भक्ति की व्यापकता का उल्लेख किया है। भक्ति का अर्थ है ईश्वर में परमार्थी परम + अनुरक्ति - परमानुरक्ति अर्थात परमासक्ति भक्ति है।

मनुष्य के लिए वही सर्वश्रेष्ठ है जिसके द्वारा भक्ति हो। भक्ति भी ऐसी चाहिए जिसमें किसी प्रकार की कामना न हो और जो निरन्तर नित्य बनी रहे। ऐसी भक्ति से हृदय आनन्दस्वरूप भगवान की उपलब्धि करके कृतार्थ हो जाता है। तुलसी ने ऐसी ही भक्ति की साधना करने का उपदेश किया है। इसलिए इनका रामचरितमानस में सम्पूर्ण ~~प्रकार~~ भक्ति के प्रकारों का उल्लेख किया है। रामचरितमानस में नवधा भक्ति का उल्लेख विस्तृत रूप में हुआ है। श्रीमद्भागवत के स्तोत्रों में विशुद्ध भक्ति भाव है।

तुलसीदास ने राम के प्रति अपार भक्ति का उल्लेख किया। [illegible] नदी को [illegible]
[illegible]

सबके नाते मांग रहे हैं तो केवल रघुवर प्रेम के बल

प्रीति कारने और कर बातें कर लो गल बात

पारस्परिक

इस प्रकार स्पष्ट है सच्ची लौकिक भक्ति बिना प्रभु कोई काम न भाय
[illegible]

नानादा भक्ति, भक्ति मार्ग की [illegible] का उल्लेख किया है। किन्तु तुलसीदास ने अपनी भक्ति भावना में इन तीनों का समन्वित रूप प्रस्तुत करने का प्रयास किया है और उन्होंने मानव जीवन की सुख शांति के लिए ज्ञान और भक्ति दोनों की अनिवार्यता बतायी है—

"श्रुति सम्मत हरि भगति पथ, संजुत बिरति बिबेक ॥"

~~श्रुति सम्मत हरि~~ भगति पथ

~~संजुत बिरति बिबेक~~

तुलसी की भक्ति में राम से बढ़कर दूसरा कोई भी सुखकर नाम नहीं है—

"राम भगति सोई मुकुति गोसाईं
अनइच्छित आवति बरिआईं"

तुलसी प्रतिपादित भक्तियोग चित्त की एकाग्रता के लिए अपेक्षित योग का भी स्थान है। वस्तुतः योग चित्त की वृत्तियों का निरोध है—

"योगः चित्तवृत्ति निरोधः"

भक्ति और प्रेम की स्थिति में मन की गति का निरोध तुलसी ने देखा है—

"कोउ कुछ कहइ न कोउ कुछ पूछा
प्रेम भरा मन निज गति छूछा"

तुलसी द्वारा प्रतिपादित भक्ति व्यक्तिगत साधना (व्यक्तिगत आत्म कल्याण) के लिए ही नहीं वरन लोक साधना और लोक कल्याण के लिए भी है। उनके आराध्य राम का जन्म ही संसार के मंगल के लिए हुआ है।

"राम जनम जग मंगल हेतू"

वस्तुतः जिस भक्ति से संसार की रक्षा होती है, जिससे संवाद चलता है वही वास्तविक भक्ति है। तुलसी की भी भक्ति में राम मर्यादा का आदर्श है। इनमें साधनागत एवं लोकगत दोनों का संतुलित समन्वय है।

तुलसी की भक्ति को सेवक भाव भक्ति

की प्रधानता दीख पड़ती है। क्योंकि राम उनके स्वामी है और उन पर अनन्यभाव से आश्रित है उनके दिव्य हीन अनाथ सेवक है। अपनी अपनी रुचि परिस्थिति अभिरुचि के अनुसार भक्त जन [illegible] वात्सल्य आदि भावों से भगवान की भक्ति करते हैं। पर दास्य भक्ति तुलसी को सबसे प्रिय था और इसलिए इन्होंने सेवक सेव्य भाव को सर्वश्रेष्ठ माना है। इसलिए गोस्वामी तुलसीदास की भक्ति भावना पूर्ण सेवक सेव्य भाव से समन्वित भक्ति भावना है।

आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने हिन्दी साहित्य के आकाश में तुलसी को वे विश्व कवि के रूप में स्वीकार करते हुए इन्हें सगुण भक्तों में सर्वश्रेष्ठ प्रमाणित किया है। भगवान का ऐश्वर्य रूप और रस रूप दोनों सगुण भक्तों का प्रिय है। राम का ऐश्वर्य रूप तुलसी ने बड़ी स्वच्छ हृदय से देखा है समझकर रस रूप की आगमता बहुत ओरवा [illegible] रस रूप का छोरवा प्रेम से छोड़ देते। रस रूप का छोरवा पार्वती और सुग्रीव दोनों को हुआ था। इसलिए सुग्रीव को भी कुछ दिन के लिए [illegible] कुआगा।

गोस्वामी तुलसीदास ने अपनी भक्ति में प्रवृत्ति और निवृत्ति के बीच समन्वय की योजना की है और इन दोनों के बीच भक्ति की राम भक्ति का स्वरूप माना है। महात्मा गांधी के स्पष्ट रूप में, माहात्म्य मार्ग की योजना अभिव्यक्ति नीतिवाणी में सुनायी पड़ी। अन्य सगुण भक्तों में अनुरूप प्रवृत्ति मूलकता अधिक दिखाई पड़ी।

इन्हें कुछ आर्थिक [illegible] करते हैं —— चार [illegible] जात है चार जात
तुलसी चार वन बीच ही राग प्रेमपूर्ण छाड़ी।।

राम भक्ति में दोनों का

सामान्य है। भक्ति के क्षेत्र में दोनों का।
अनिवार्यता मानते हैं। दोनों संसार को
असार मानते दोनों ही अनिवार्य हैं।
दोनों ही भक्ति की अनिवार्यता मानते
पदार्थों की अपेक्षा सामाजिक नीति के
अनुसार अज्ञ ... सरलता होना चाहिए
जिससे भगवान से प्रीति उसे प्राप्त कर लेते
... संगति से भक्ति की सगुणता ...
भक्ति की ऐसी धारणा और सरली
होनी चाहिए कि उसे प्रत्येक साधक
भी समता से जीवन निर्वाह हो। इसलिए
भक्ति करने का अधिकार सबको है।
सबकी ... सगुण भक्ति का
आन्दोलन केवल धार्मिक आन्दोलन नहीं
था। सामाजिक आन्दोलन था जो
सामाजिक मर्यादा का खंडन करते हैं
सबके लिए उन मार्गों को खोल देता
है जो परम्परा के लिए बन्द है। इसलिए
मीरा को उन्होंने सामाजिक बंधनों का
खंडन करने का परामर्श दिया। और
राम की भक्ति में अनुरक्त होने का
उपदेश दिया।

जाके प्रिय न राम बैदेही ...

जो सब होय सनेह राम पद हित मतो हमारे।

भक्तों की राम राजनीतिक परिस्थितियों के प्रति कैसी
रुचि थी। इसका पता आन्दोलनों की रचना से
कम तुलसी की रचना से अपेक्षाकृत
अधिक लगता है। तुलसी ने राम का चरित्र को
विविध शैलियों में आबद्ध किया। राम भक्ति
की प्रसार के लिए उन्होंने बड़ा व्यापक भक्तियाँ
रघुनीत पूजा करवाकर सारे से ना

गए स्थानों में प्रचार किया। काशी में विभिन्न स्थानों पर हनुमान का मंदिर बनाये। इनके सम्मुख मंदिर बनाये गये। ~~राम~~ के अनुयायी राम के साथ हनुमान मंदिर के मूर्ति के साथ-साथ तुलसी की भक्ति भाव इतनी ~~प्रखर~~ प्रखर और प्रबल रही जिनके कारण बनारस के दोनों खंडों में — ~~काशी और काशी में~~ राम लीला का प्रचार हुआ। राम नगर की राम लीला का सांस्कृतिक समारोह तुलसीदास की राम भक्ति भावना का उज्ज्वलतम समारोह है।

तुलसीदास राम भक्ति का ऐसा ~~संस्कृति~~ संवाद समारोह खड़ा करना चाहते हैं जो खड़ा हो गया। तुलसीदास की कवितावली में राम के सौन्दर्य के प्रति आकर्षण भक्ति के प्रति आस्था और शील का अनुकरण भक्ति है। शिव हनुमान बाहुक है।

इस प्रकार हम कह सकते कि तुलसीदास ने राम भक्ति का जो स्वरूप प्रस्तुत किया है उसकी सबसे बड़ी विशेषता सर्वांगीणता है। इस सर्वांगीणता को मानस के ~~सर्व सेवा~~ सप्तम सोपान ज्ञान दीपक और भक्ति मणि के रूप द्वारा स्पष्ट करने का ~~प्रयास~~ कोशिश किया गया है। ईश्वर के प्रति प्रेमानुरक्त होने से जगत के प्रति आप से आप विरक्ति हो जाती है। इसी से हरिभक्ति मुक्ति का आदर नहीं करते —

"अस विचारि ~~मुक्ति~~ हरि भगत सयाने ~~निरादर मुक्ति~~
मुक्ति निरादर भगति लुभाने।"

रामानन्द ~~मार्ग~~ पन्थगामी तुलसीदास की ~~विशेषता~~ भक्ति में पायी जाती है। प्राचीन काल ~~की~~ साधना के जो तीन तत्व ज्ञान कर्म उपासना हैं ~~वे भिन्न भिन्न ... के~~ उनमें से प्रत्येक की साधना ~~भक्ति~~ का स्वतंत्र रूप से होती थी।

Scanned with CamScanner

रूप से होती है और प्रत्येक मार्ग का स्वहित रूप करते हुए केवल इसी मार्ग की ओर जाती है। तुलसीदास की आपनी भक्ति में इन तीनों को संगमित किया है। ——

राम भगति जहँ सुरसरि धारा ~~[illegible]~~ विधि
निषेध ~~[illegible]~~ सरस- ब्रह्म विचार प्रचारा
विधि निषेध मय कलि मल हरनि
करम कथा रवि नंदन बरनि।।

भक्ति की भावना में भी भक्त सेवक-सव्य भाव को ही सर्वोपरि मानता है। ~~सेवक सव्य भाव~~

सेवक सव्य भाव बिनु भव न तरिय उरगारी
भजहु राम पद पंकज अस सिद्धांत विचारि।।

इसलिए सेवक सव्य भाव ही सही तुलसी की दृष्टि में सर्वोपरि है। इससे अहम् का विसर्जन हो जाया करता है। भक्ति का मार्ग सदाचार का मार्ग है। संयोग का मार्ग है। वाक् संयम मन संयम इसके लिए आवश्यक है। इन दोनों संयम तभी हो सकते हैं जब भगवत प्रेम अर्थात भक्ति है। भक्ति के बिना ज्ञान की सिद्धी नहीं होती। यह तुलसीदास का स्वयं मत है। ——

हरि भक्ति बिना कर्मणा न स्यादिह मुक्ति कारणम्।
न वा सिद्ध्येत् न विवेकादि न ज्ञानम् नापि मुक्तता।।

x — x — x — x — x — x